E Content for the student of Patliputra University

Subject - Political Science

Class B.A.(Hons.) Part-II Paper IV

Topic Indo - Nepal Relations

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Professor, Pol. Sc
R.R.S. College, Mokama.

वर्तमान समय में भारत और नेपाल का संबंध अप्रत्याशित रूप न केवल भारत को बल्कि संपूर्ण विश्व को आश्चर्यचकित किया है। भारत के उत्तर हिमालय की तराई में बसा छोटा सा देश नेपाल एक भौगोलिक सन्निकटता, सामाजिक जुड़ाव, धार्मिक एकरूपता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है। नेपाल की नदियाँ बहकर भारत में आती है। नेपाल होकर भारत के लोग हिमालय, कैलाश तथा मानसरोवर की यात्राएँ करते हैं। नेपाल का पशुपतिनाथ मंदिर भारतीयों के लिए विशिष्ट आस्था का केन्द्र है। बिहार और उत्तर प्रदेश के बहुत लोगों का नेपाल से शादी-रिश्ते का भी बंधन है। इन निकटताओं के कारण भारत और नेपाल के बीच यात्रा के लिए वीजा और पासपोर्ट का बंधन नहीं रखा गया है। इसके बावजूद ब्रिटिश काल से ही अबतक नेपाल के क्षेत्र में भारतीय अभियुक्तों को सामान्य रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। यही कारण है कि 1942 के आंदोलन, 1974 के आंदोलन में बहुत से आंदोलनकारी नेपाल जा कर गिरफ्तारी से बचे हुए थे।

भारतीय स्वतंत्रता के पूर्व भारतीय नेताओं के सहयोग से नेपाली कांग्रेस की स्थापना की गई। विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला से, जो नेपाल के प्रधान मंत्री भी बने थे तथा उनके दल के कई लोग प्रधान मंत्री बने, भारतीय नेताओं से व्यक्तिगत संबंध हुआ करते थे।

नेपाल चारों ओर जमीन से घिरा प्रदेश है। समुद्र से दूर रहने के कारण उसे व्यापार के लिए भारत पर निर्भर रहना पड़ता है। 1950 में भारत के साथ नेपाल की मैत्री संधि नेपाल के प्रति भारतीय सद्भाव का अनूठा उदाहरण है। नेपाल के विकास, खासकर दक्षिण भारत ने किया। नदियों की बहुलता के कारण कई पनबिजली परियोजनाएँ, बाँध, सड़कों के निर्माण आदि में भारत ने दिल खोलकर साथ दिया। प्रारंभ में ही राजशाही के विरुद्ध राजा का आंदोलन हुआ था तो भारत ने राजशाही की रक्षा की थी। संवैधानिक राजतंत्र के साथ प्रजातांत्रिक पंचायत व्यवस्था का भारत समर्थन करता रहा था।

सारे संबंध अच्छे चल रहे थे। 1985 में सार्क की स्थापना के समय भी भारत ने नेपाल का सहयोग किया तथा सार्क का मुख्यालय नेपाल में बनवाया। किंतु धीरे-धीरे नेपाल के मामलों में चीन का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। नेपाल के राजा बीरेंद्र भी बड़े-बड़े भारत विरोधी बयान दे दिया करते थे। राजीव गांधी के प्रधानमंत्री के काल में ही जब सार्क का मुख्यालय काठमांडू में बनाया गया, विवाद के मुद्दे बढ़ गये।

नेपाल 1950 की संधि को बदलना और समाप्त करना चाहता है। इसमें उसे चीन का सहयोग मिलता है। भारत विरोधी नेपाल में भावना व्याप्त होता जा रहा था। परिणाम स्वरूप कई बार नेपाल पर आर्थिक प्रतिबंध भी लाचार होकर लगाना पड़ा।

नेपाल में जब राजशाही विरोधी आंदोलन प्रारंभ हुआ, भारत ने अपने को नेपाल के आंतरिक मामलों से अलग रखा। राजशाही का अंत हुआ, कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार बनी।

इसके बाद प्रत्यक्ष रूप से नेपाल की

चीन से सन्निकटता बढ़ने लगी प्रचंड के प्रधानमंत्री काल में उनके संबंध बढ़े। फिर भी भारत धैर्य पूर्वक सदाशयता का परिचय दिया। भारत की ओर से हमेशा प्रयास रहा कि भारत कभी भी अपनी ओर से नेपाल के साथ कटु संबंध न बनाये।

वर्तमान समय में चीन अपनी विस्तारवादी नीति की तरह भारत के साथ टकराव की ओर बढ़ चला है। चीन अबतक अपनी भारत विरोधी नीतियों के लिए पाकिस्तान का उपयोग एक साधन के रूप में करता था। अब उसने अपना नया साधन नेपाल को बनाया है।

नेपाल के वर्तमान प्रधानमंत्री के०पी० शर्मा ओली अपने अजीबोगरीब वक्तव्यों के लिए भारत और नेपाल में हमेशा चर्चा में रहते हैं।

वर्तमान विवाद का संबंध भारत के द्वारा कैलाश के लिए बनाये जाने वाली सड़क से है। चीन के उकसावे से इसे कहानी का एक आधार बनाया गया है। सड़क कुछ दिनों से बन रही होगी, नेपाल ने कोई विरोध नहीं किया। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह के द्वारा उसका उद्घाटन भी किया गया, नेपाल का कोई विरोध नहीं। कुछ दिनों के बाद प्रधानमंत्री ओली का वक्तव्य आया कि सड़क का कुछ हिस्सा नेपाल में है। उसके बाद लगातार कड़वे-कड़वे वक्तव्य आने लगा। उन्होंने एक नक्शा बनाकर भी उस क्षेत्र को नेपाल में दिखलाया। इतना ही नहीं प्रधानमंत्री अपने उत्तेजक वक्तव्यों के द्वारा तनाव इतना बढ़ा रहे हैं, जिससे युद्ध की संभावनायें बढ़ती हैं।

भारत ने नेपाल के प्रति संयम की नीति का पालन करने का निर्णय लिया है। इस बीच ओली की नीति, वक्तव्यों एवं प्रयासों का घोर विरोध शुरु हो गया है।

उनकी पार्टी के वरिष्ठ नेता प्रचंड विरुद्ध में हैं। वे दल की बैठक बुलाकर ओली को अपदस्थ करना चाहते हैं।

उनकी शक्ति का स्रोत चीन है, जो अपने राजदूत के माध्यम से नेपाल की राजनीति में हस्तक्षेप कर ओली की रक्षा कर रहा है। किसी राजदूत द्वारा किसी देश के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप का ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा।

इस बीच ओली ने एक और वक्तव्य देकर भारत और नेपाल में अपनी स्थिति हास्यास्पद बनायी है। उन्होंने कहा है कि भगवान राम का जन्म अयोध्या में न होकर नेपाल में हुआ है। इनके इस वक्तव्य का काफी विरोध भारत और नेपाल दोनों देशों में हो रहा है।

सच्चाई यह है कि भारत-नेपाल का संबंध अभी काफी विस्फोटक स्थिति में पहुंच गई है। ओली चीन के खिलौना के रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं। भारत संयम के साथ स्थिति पर नजर रख रहा है। चीन नेपाल के माध्यम से भारत के विरुद्ध बहुत निंदनीय चाल चला है। यह भविष्य के गर्त में है कि नेपाल की आंतरिक राजनीति इस विवाद को सम्हालने में कारगर भूमिका निभाती है या भारत को नेपाल के विरुद्ध कड़ा कदम उठाना होगा।